श्रीशिवमानसपूजा

श्रीशिवमानस पूजा — इस भक्तिपूर्ण स्तोत्र को गाना और अपने मन को इसके अर्थ में निमग्न करना, भगवान शिव की उपस्थिति का आवाहन करने का एक शक्तिपूर्ण तरीक़ा है।

इस स्तोत्र की रचना आठवीं शताब्दी के आध्यात्मिक गुरु, आदि शंकराचार्य जी ने की थी। इसे १९६० के दशक में बाबा मुक्तानन्द ने आश्रम के दैनिक कार्यक्रम में, 'श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रम्' के पाठ के साथ सम्मिलित किया और तभी से यह स्तोत्र सिद्धयोग आश्रमों में गाया जाता है। सिद्धयोगी जब सेवा करना आरम्भ करते हैं तब नियमित रूप से श्रीशिवमानसपूजा के श्लोक ४ और ५ गाते हैं और इस प्रकार वे अपने कर्मों को श्रीगुरु और भगवान की सेवा में समर्पित करते हैं।

श्रीशिवमानसपूजा में, पूजा के बाहरी कृत्य की अन्तर में कल्पना की जाती है और साथ ही सुन्दर, सुगन्धित, मधुर पूजा-सामग्री अपने इष्टदेव को अर्पित की जाती है जिसे आराधक अपने मन की असीमित कल्पना द्वारा निर्मित करता है। इस मानसपूजा में, वह अपनी सत्ता के विभिन्न पहलुओं को भगवान शिव के गुणों के रूप में पहचानता है, जिसके फलस्वरूप उसकी आराधना उसे इस ज्ञान तक ले जाती है कि वह भगवान के साथ एकाकार है।

मानसपूजा के इस स्तोत्र की सहायता से आप स्वयं अपनी मानसपूजा की रचना कर सकते हैं। श्रीगुरु अथवा अपने इष्टदेव की मानसपूजा, मन को एकाग्र करने और उसकी शुद्धि करने में तथा साधक को उसके आराध्य के साथ एकाकार होने में मदद करती है।

श्लोक १

हे देव! हे दया के सागर पशुपति महादेव!

मैंने आपके लिए हीरे, माणिक, मोती आदि अनेक रत्नों से जड़ित

एक दिव्य सिंहासन कल्पित किया है।

हे शिव, आपके लिए मैंने गंगा आदि हिमनदियों और हिमसरोवरों के जलों

द्वारा स्नान का आयोजन किया है;

दिव्य वस्त्र बनाए हैं; अनेक रत्नों से सुशोभित अलंकार हैं;

कस्तूरी की सुगन्ध से युक्त चन्दन का अंग-लेप तैयार किया है;

चमेली, चम्पा, बेल-पत्र, अन्य पुष्प एवं सुवासित धूप द्वारा पूजन-सामग्री की रचना की है;

फिर मैं अपने हृदयरूपी अथवा हृदय द्वारा कल्पित दीपक को आपके सामने जलाता हूँ।

हे सर्वान्तर्यामी महादेव! आप मेरी इस पूजा को स्वीकार कीजिए।

श्लोक २

मैंने सुवर्ण के नवरत्न-जड़ित विविध पात्रों में आपके लिए

घी, क्षीरान्न, पाँच प्रकार के दूध-दहीयुक्त पदार्थ भोजन के लिए रखे हैं,

केले आदि फल भी हैं। भोजन में अनेक प्रकार के शाक अलग-अलग पात्रों में मैंने रखे हैं;

शुद्ध, निर्मल, सुस्वादु जल आपके पीने के लिए लाया हूँ।

हे प्रभो, मैंने आपके लिए भक्तिपूर्ण मन से दिव्य गन्धों से युक्त

एक पान बनाया है, आप इसे स्वीकार कीजिए।

श्लोक ३

हे प्रभो, मैं आपको छत्र समर्पित करता हूँ और दो चँवरों से बने पंखे को आप पर झुलाता हूँ।

मैं आपके लिए एक अत्यन्त पवित्र, स्वच्छ दर्पण लाया हूँ।

मैंने आपके लिए वीणा, भेरी, मृदंग, करताल, मँजीरों की दिव्य ध्वनियों से युक्त गीत और नृत्य का आयोजन किया है। मैं आपको साष्टांग प्रणाम करता हूँ और अनेक दिव्य स्तोत्रों से आपका गुणगान करता हूँ।

हे विश्वरूप परशिव, मेरी यह समस्त पूजा मानसिक संकल्प द्वारा रची गई है।

हे प्रभो, आप इसे ग्रहण कीजिए।

श्लोक ४

हे शम्भो! हे सर्वसाक्षी प्रभो, आप ही मेरी आत्मा हैं, पार्वती मेरी बुद्धि हैं,

आपके साथ विचरण करने वाले गण आदि मेरे प्राण हैं, मेरा शरीर आपके निवास का मन्दिर है।

मैं जिन-जिन इन्द्रियों से जिन-जिन विषयों का उपभोग करता हूँ, वह सब आपकी पूजा-रचना है।

मेरी नींद समाधि-अवस्था है। मैं पैरों से जहाँ कहीं भी चलता-फिरता हूँ वह आपकी परिक्रमा ही है।

मेरे मुख से निकलने वाली वाणी आपकी स्तुतियाँ हैं।

हे महादेव, मैं जो-जो भी कर्म करता हूँ, वह सब कुछ, वे सब क्रियाएँ आपकी आराधना हैं।

श्लोक ५

हे करुणा के सागर! हे महादेव! हे सर्व देवाधिदेव!

फिर भी अगर मुझसे, मेरे हाथों से, पैरों से, वाणी से, शरीर से, कर्म से, कानों से, नेत्रों से अथवा मानसिक रूप से, जानते हुए या अनजाने में कोई अपराध हो गया हो या होने वाला हो तो हे प्रभो, ऐसे मेरे किसी भी अपराध को क्षमा करना।

हे सदाशिव प्रभो, आप करुणा के सागर हैं, आपकी जय हो, जय हो।

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।